नेहरू व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व

एक पड़ताल

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

नेहरू व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व

एक पड़ताल

डॉ. गौरव त्रिपाठी, डॉ. संगीता सिन्हा

नमूना • SAMPLE

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
दिल्ली (भारत)

द्वारा प्रकाशित



अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस

Publisher, Distributor, Exporter having an Online Bookstore

एल–9ए, प्रथम तल, गली न0 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली–110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9555149955, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.com

नेहरू व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व
एक पड़ताल

संस्करण : 2021
© डॉ. गौरव त्रिपाठी, डॉ. संगीता सिन्हा
ISBN: 978-81-948850-9-2

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक/सम्पादक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

झपसू यादव द्वारा 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के लिए प्रकाशित। वी.एम. ग्राफिक, दिल्ली द्वारा कवर डिजाइन व शब्द संयोजन तथा आरना इंटरप्राइजेज, दिल्ली से मुद्रित।

SAMPLE

समर्पण

गाँधीवादी सिद्धान्तों के अनुयायी
और
वंचितों के प्रति संवेदनशील
शिवमूर्ति तिवारी जी
को सादर।।

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

पुरोवाक्

पं. जवाहर लाल नेहरू आधुनिक भारत के महान शिल्पी थे। वह ऐसे कुशल राष्ट्रनिर्माता थे, जिसने विविधता की भारत की कमजोरी को ही उसकी सबसे बड़ी ताकत बना दिया। विश्व के सबसे बड़े संवैधानिक लोकतंत्र के वह संस्थापक प्रधानमंत्री थे। इतिहास में ऐसा कम होता है कि राष्ट्रनिर्माण का कोई स्वप्न बुनने वाले को उसे तराशने और साकार रूप देने का अवसर भी इतिहास दे। नेहरू जहां आधुनिक भारत रचना के दूरदर्शी स्वप्नद्रष्टा थे, तो वहीं इतिहास ने उस स्वप्न को तराशने का मौका और यश भी उन्हें प्रदान किया। वह एक प्रशस्त इतिहासकार भी थे और एक यशस्वी इतिहास निर्माता भी। उन्होंने 'भारत की खोज' लिखी, तो एक भारत हमें दे कर भी गये, जिस पर हम भारत के लोग गौरव रखते हैं।

नेहरू ने जो बीज बोया था, वह आज बट वृक्ष है, जो भारत उन्होंने खोजा, तराशा और विरासत में हमें दे गये, वह हर चुनौती और झंझावात को चीर कर आगे बढ़ा और दुनिया में शान से सिर उठा कर खड़ा है। उस भारत स्वप्न को तराशने एवं संवारने में जो खूबियां नेहरू ने पिरोयी थीं, उनकी खुशबू दुनिया में दूर तक जाती है। एक राष्ट्र के रूप में भारत की जिन खूबियों का दुनिया में आज बखान होता है, उनकी जड़ों में बेशक नेहरू ज्यादा हैं। शताब्दियों के सामंतशाही एवं साम्राज्यशाही के क्रूर शोषण से चूसे हुये आम की गुठली जैसा एक जर्जर भारत उनको मिला था। व्यापक विविधताओं की जटिल पृष्ठभूमि उसकी बड़ी चुनौती थी। ऐसे देश में लोकतंत्र का पौधा रोपना, उसे पल्लवित एवं विकसित

SAMPLE

करना और उसके साथ उसे सहज एकता की राजनीतिक लोक चेतना के सूत्र में पिरोकर सुनियोजित प्रगति के पथ पर ले चलना आसान काम नहीं था। ऐसी पृष्ठभूमि में लोकतंत्र के रास्ते लोक कल्याणकारी विकास की मंजिल की मंजिले तय करना कठिन चुनौती थी। यह काम ऐसा कुशल कप्तान ही कर सकता था, जिसके पास मुल्क की विविधता में एकता का सूत्र पिरोने की समन्वयी चेतना से अनुप्राणित गतिशील इतिहास दृष्टि हो। साथ ही जिसमें अपनी सांस्कृतिक विरासत की गहरी समझ की बुनियाद पर आधुनिक भारत के विकास की सुस्पष्ट विश्व दृष्टि भी हो। नेहरू जैसे दूरदर्शी भारत स्वप्नद्रष्टा राष्ट्रनायक ने इस युगदायित्व को कुशलता से निभाया और एक मजबूत राष्ट्र की नींव रखी। उनकी जगह कोई और कप्तान होता तो शायद भारत की वे खूबियां कुंठित हो जातीं, जिनके लिये उसे दुनिया में सराहा जाता है। संभव था कि सामासिक संस्कृति और विविधता में एकता के प्रतीक एक प्रगतिशील लोकतांत्रिक भारत की जगह, धार्मिक कट्टरताओं के मताग्रही जड़त्व में लिपटे एक आत्मकेन्द्रित भारत में हम सब होते।

इतिहास में नेहरू के खास मायने हैं। नेहरू के मायने हैं एक आधुनिक भारतीय राष्ट्र का सपना, उस सपने को तराशने का शिल्प और उस शिल्प के प्रयोग की कुशलता का महारथ। नेहरू के दौर में भारत की चुनौतियां बड़ी थीं। दूसरी ओर उनसे लोगों की उम्मीदें भी बहुत ज्यादा थीं। बेशक जनाकांक्षाओं की वह कसौटी आसान नहीं थी, पर नेहरू उस कसौटी पर भी खरे उतरे। कारण भी साफ था कि जटिल विविधताओं की पृष्ठभूमि और राजनीतिक विघटन की लंबी परम्परा के साथ–साथ, हजारों वर्ष के सामंतवाद एवं साम्राज्यवाद के संगठित शोषण की विरासत से निकले भारत को एक समर्थ एवं लोकतांत्रिक आधुनिक राष्ट्र का रूप देने का उनके पास जहां दृष्टि थी, वहीं उसे साकार करने का हुनर एवं आत्मविश्वास भी। उनकी नीयत साफ थी, तो उनका इरादा भी पक्का था। अतः उन्होंने एक सुविचारित और सुनिश्चित दिशा में राष्ट्रनिर्माण और राष्ट्रीय विकास का नेतृत्व किया। बीती सदी के आखिरी दोनों दशकों में द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के नव स्वतंत्र देशों में स्थापित लोकतंत्रों एवं जनवादी प्रगतिशील राजनीतिक

व्यवस्थाओं के व्यापक पतन का स्वर साफ सुनाई दे रहा था। राजनीतिक व्यवस्थाओं को ढहाने में पश्चिम से उठी वैश्वीकरण एवं उदारीकरण की आँधी के बीच विकासोन्मुख देशों पर दबाव स्पष्ट था कि सुधरो या टूटो। सुधारों अपनी आर्थिक व्यवस्था को पश्चिमी दुनिया की उन्मुक्त बाजार की वैश्वीकरण की शर्तों पर, नहीं तो टूटो। तोड़ने के दो पलीते प्रयुक्त थे – आर्थिक प्रतिबंध और धर्मोन्मादी आन्दोलनों को प्रोत्साहन। ये दोनों ही चुनौतियां भारत में भी सक्रिय थीं और हमारे संवैधानिक लोकतंत्र पर दबाव बनाये हुये थीं। पंजाब, काश्मीर या असम सहित पूर्वोत्तर में उग्र संविधानेतर आन्दोलनों का स्याह साया देश पर पसरा हुआ था और लगता था भारत का संवैधानिक लोकतंत्र विघटन की दहलीज पर खड़ा है। बार–बार संविधान संशोधन कर राष्ट्रपति शासन बढ़ाये जाते थे। इसके बावजूद भारत अपने संवैधानिक मूल्यों सहित, अपने लोकतंत्र एवं राष्ट्रीय अखंडता का वजूद क़ायम रखने में कामयाब ही नहीं हुआ, बल्कि लोकतंत्र के फलक को विस्तार देने का काम भी उस दौर में हुआ। साथ ही पूरी एकजुटता एवं सम्यक् तैयारी के साथ हम 21वीं सदी के समर्थ राष्ट्र के विकास की दिशा में आगे बढ़ते हैं। बेशक इसके पीछे थी आधुनिक भारतीय राष्ट्रनिर्माण और उसके सुदृढ़ विराट संवैधानिक गणतंत्र की मजबूत बुनियाद। उस बुनियाद की कुशल शिल्पी, जमात में पं. नेहरू के योगदान का अग्रणी महत्व रहा है।

नेहरु भारतीय स्वतंत्रता के राष्ट्रीय आन्दोलन के गांधी युग की उपज थे। गांधी ने ही तराश कर नेहरू जैसा महानायक गढ़ा। ऐसा कम ही होता है कि एक युगपुरुष, दूसरा युगपुरुष भी पैदा करे। कबीर दूसरा कबीर भले न गढ़ सके हों, पर एक महानायक गांधी ने दूसरा महानायक नेहरू गढ़ा था। लखनऊ कांग्रेस में 1916 में पहुंचे गांधी से वहां गंगा प्रसाद धर्मशाला में नेहरू की पहली मुलाकात हुई थी। इसी के साथ आधुनिक भारत निर्माण की दो पीढ़ियों के महानायकों की ऐसी धुरी बनी, जिस पर आगे चल कर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की गति व दिशा निर्भर रही। गांधी सरीखे पारस ने नेहरू को सोने जैसी चमक दी थी। विज्ञानवादी मानववाद के प्रति प्रतिबद्ध उत्साह से लैस नेहरू का प्रार्थना, सत्याग्रह, अंतर्रात्मा की आवाज और खादी एवं

चरखे से लैस गांधी के साथ अटूट तादात्म्य था। दोनों के बीच मतभेदों के बावजूद परस्पर अटूट विश्वास से भरे तादात्म्य की लंबी पाली का सिलसिला विलक्षण ही नहीं, इतिहास का एक ऐसा रोचक रहस्य भी है, जिसके उत्तर इतिहासकार तलाशते रहे हैं और तलाशते रहेंगे। इसका सटीक उत्तर वे भले न तलाश सकें, लेकिन आधुनिक भारत के इतिहास में इसके गहरे और दूरगामी प्रभाव को वे नकार नहीं पाते। गांधी–नेहरू का यह तालमेल वामपंथी इतिहासकारों के लिये जहां हैरत का विषय रहा है, वहीं दक्षिणपंथी इतिहासविदों के लिये अपच पैदा करने वाला। वस्तुतः एक संगम सरीखे इस तादात्म्य ने सही मायने में आधुनिक भारतीय राष्ट्रनिर्माण की प्रक्रिया एवं स्वरूप को आकार और उत्कर्ष प्रदान करने का काम किया। राष्ट्रीय आन्दोलन की विचारिकी एवं दार्शनिकता में राष्ट्रवाद, लोकतंत्र व धर्मनिरपेक्षता के स्थापित सैद्धान्तिक स्तम्भों के साथ नेहरू ने समाजवादी रुझान वाले लोककल्याणकारी राज्य के चिन्तन के चौथे सैद्धांतिक पाये की स्थापना का वैचारिक नेतृत्व किया। उससे गांधी की जाहिर असहमतियाँ थीं। इसके बावजूद गाँधी–नेहरू धुरी अटूट रही और किसी भी मोड़ पर नेहरू को गांधी का त्याग अस्वीकार्य था। उनकी सुस्पष्ट धारणा थी कि गाँधी के बिना भारत में साम्राज्यवाद के विरुद्ध किसी सार्थक संघर्ष की कल्पना ही नहीं की सकती है। अतः स्पष्ट है कि नेहरू के साम्राज्यवाद विरोध में समाजवाद भी रहा होगा, लेकिन राष्ट्रवाद का पुट ज्यादा था। इस वैचारिक भाव वितान ने भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के चिन्तन प्रवाह में राष्ट्रवाद, लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता और समाजवादी रुझान वाले लोककल्याणकारी राज्य के सैद्धांतिक चौखम्बे को परस्पर पूरक एक जैविक संरचना बना दिया।

गाँधी के प्रभावों ने नेहरू को स्वतंत्रता संग्राम का सबसे अग्रणी लोकप्रिय सेनानी बनाया। एक धनाढ्य रईस परिवार में जन्मे और पले जवाहर लाल के पिता मोतीलाल जी अनेक चिन्तायें लेकर गाँधी के पास जाते थे। वे चिन्तायें बेटे के थर्ड क्लास में रेल यात्रा करने से लेकर किसान आन्दोलनों में अवध के गांवों की धूल फांकने अथवा हिन्दुस्तानी सेवा दल कैंपों में भंडार के बर्तन मांजने से लेकर पूरी तरह चर्खा और

खादी में रम जाने जैसी बातों को ही लेकर ज्यादा रहती थीं। कभी उन्हें कैंप में बर्तन मांजते देखकर बापू के पास पहुंचे मोती लाल नेहरू ने बापू को ब्लैंक चेक पकड़ाते हुये कहा कि कैंप में दिक्कतें हैं तो समुचित बन्दोबस्त के लिये उचित रकम भर कर आप निकलवा लें। बापू ने रकम के कालम में लिखा "जवाहर लाल नेहरू", तो पानी पानी हुये मोतीलाल जी के पास क्षमा मांगने का विकल्प न था। उस समृद्ध रईस परिवार में हर संभव सुख व वैभव के भोग का अवसर त्याग कर जवाहर लाल नेहरू ने भरी जवानी के, महज 13 दिन कम पूरे 10 साल ब्रिटिश सत्ता की लौह सलाखों की जेलों में काट दिये थे। उल्लेखनीय है कि गांधी जी के सभी आन्दोलनों में जेल जाता रहा कोई भी प्रमुख नेता 5 या 6 साल से अधिक जेल नहीं रहा था। जवाहर लाल पर पिता का कोई असर नहीं पड़ा, लेकिन पिता पर जवाहर लाल का भरपूर असर पड़ा। वैभव प्रतीक आनन्द भवन परिसर की रईसी एवं शानो शौकत का देखते–देखते गांधीवादी अधिग्रहण हो गया। मोतीलाल जी ने वकालत ही नहीं बंद की, जेल भी जाने लगे। विधायिका सभा छोड़ दी। बच्चे अंग्रेजी स्कूलों से हटा लिये। घोड़े, गाड़ियां, कुत्ते व तमाम कीमती विदेशी सामान आनन्द भवन से हट गये। विदेशी वस्त्रों की होली भी जलाई गई और नौकरों चाकरों की फौज घट गई। आनंद भवन परिसर में न केवल खादी का साम्राज्य पसर गया, बल्कि आने वाले दिनों में कांग्रेस तथा आन्दोलनों का वह सूत्र संचालन का केन्द्र बनकर उभरा। अभिजात परिसर देखते–देखते खादी एवं चरखे वाले सत्याग्रहियों की सराय बन गया। बेशक नेहरू आजादी के बाद विशालतम भारतीय लोकतंत्र के संस्थापक प्रधानमंत्री बने, लेकिन अपनी राजनीतिक यात्रा शुरू तो की अवध के किसान आन्दोलनों से और इलाहाबाद नगर पालिका का चुनाव जीतकर। आजादी के पूर्व तीन बार और आजादी के बाद भी तीन बार वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष निर्वाचित हुये। आजादी पूर्व के प्रान्तीय चुनावों और आजादी के बाद के तीन आम चुनावों में वह अपने दल में सर्वाधिक मांग वाले लोकप्रिय शीर्ष स्टार प्रचारक जननेता थे।

सन् 1927 में साइमन कमीशन बना तो सर्वदलीय बैठक के बाद जवाहर लाल नेहरू ने ही उसके बायकाट की घोषणा की। साथ ही

कांग्रेस ने मोतीलाल नेहरू समिति का गठन कर, उस पर यह जिम्मेदारी दी कि वह भारत के लिये संवैधानिक प्रारूप सुझाये। उस समिति की रिपोर्ट जब 1928 की कलकत्ता कांग्रेस में प्रस्तुत हुई, तो जवाहर लाल नेहरू एवं सुभाष चन्द्र बोस ने विरोध किया। विरोध की वज़ह यह थी कि प्रारूप उस समय तक कांग्रेस के घोषित आधिकारिक लक्ष्य 'स्वशासन' की मांग के दायरे में था, जिसका संकल्प कभी बनारस कांग्रेस में लिया गया था। दूसरी ओर देश के युवा नेतृत्व को अब पूर्ण स्वतन्त्रता के नीचे कुछ भी स्वीकार नहीं था, जिसके लिये गांधी की गैर मौजूदगी में जवाहर और सुभाष बाबू एक प्रस्ताव साल भर पहले 1927 की मद्रास कांग्रेस में पारित करा चुके थे। कलकत्ता में महात्मा गांधी के हस्तक्षेप के बाद रिपोर्ट एक साल में लागू करने के अल्टीमेटम के साथ स्वीकृत हुई। एक साल बाद 1929 की ऐतिहासिक लाहौर कांग्रेस खुद पं. जवाहर लाल नेहरू की अध्यक्षता में हुई। रावी तट पर 31 दिसम्बर की आधी रात के बाद अल्टीमेटम अवधि पूरी होने पर, उनकी अध्यक्षता में कांग्रेस ने 'पूर्ण–स्वाधीनता' का संकल्प पारित किया। साथ ही 26 जनवरी को स्वतंत्रता दिवस मनाने का संकल्प भी लिया गया। उसके तहत 1930 से 1947 तक 26 जनवरी को कांग्रेस देशभर में स्वतंत्रता दिवस मनाती थी। यही कारण था कि नेहरू के परामर्श पर स्वतंत्रता के बाद उस ऐतिहासिक तिथि को गणतंत्र दिवस का रूप दिया गया।

1931 में सरदार पटेल की अध्यक्षता में हुई करांची कांग्रेस में नागरिकों का मौलिक अधिकार चार्टर पारित हुआ। उस प्रस्ताव का प्रारूप नेहरू एवं सुभाष ने मिलकर बनाया था जिसे गाँधी जी ने प्रस्तुत किया। कांग्रेस में समाजवादी जमात के भी स्वाभाविक अगुआ नेहरू थे। वह 1934 के पटना कांफ्रेंस में जाते तो कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के संस्थापक अध्यक्ष बनते, लेकिन शायद गांधी से अलग राह पर जाना उन्हें गंवारा न था। इस तरह समाजवाद के साथ जहां राष्ट्रवाद में उनकी साफ प्रतिबद्धता थी, वहीं वह एक समर्पित लोकतंत्रवादी थे। नेहरू मन, चित्त, आत्मा के संस्कार से मुकम्मल लोकतंत्रवादी थे। उनके लिये लोकतंत्र का विश्वास राजनीतिक प्रणाली मात्र नहीं, निजी एवं राष्ट्रीय जीवन की शैली जैसा था। एक व्यक्ति के भी उचित विरोध को

भी महत्ता देने एवं उसे स्वीकारने का संस्कार उनमें था। आलोचना के हक और समादर के साथ ही, अपनी आलोचना सुनने का भरपूर धैर्य भी उनमें था। आलोचना करने वाला न मिले तो आत्मालोचना की सामर्थ्य एवं हिम्मत भी उनमें थी। नेहरू अपनी सरकार की आलोचनायें 'चाणक्य' के छद्म नाम से अखबार में खुद लिखते थे। उन्होंने कहा था कि मैं ऐसी सरकार में विश्वास करता हूँ, जिसके सशक्त आलोचक हों और जिसका मुकाबला करने के लिए सशक्त विरोधी दल हों। वह राजनीतिक लोकतंत्र के साथ–साथ सामाजिक और आर्थिक लोकतंत्र की दिशा में ठोस प्रगति को भी महत्वपूर्ण मानते थे। वह धर्मनिरपेक्षता को लोकतंत्र की कसौटी मानते थे। उनका विश्वास था कि राष्ट्रवाद और साम्प्रदायिकता एक साथ नहीं चल सकते और धर्मनिरपेक्षता के बिना तो लोकतंत्र की कल्पना संभव नहीं। उनकी धर्मनिरपेक्ष दृष्टि का समूचा मर्म संविधान में पिरोई गई नागरिकों के मूल अधिकारों की अवधारणा एवं संरचना में समाया हुआ था।

जवाहरलाल नेहरू न केवल उच्च कोटि के राजनेता थे, बल्कि कालजयी महत्व रखने वाले ग्रंथों के रचनाकार एक यशस्वी लेखक एवं इतिहासविद् भी थे। 'भारत की खोज', 'विश्व इतिहास की झलक' आदि सहित प्रशस्त ग्रंथ उन्होंने जेलों में रह कर लिखे। सार्वजनिक जीवन में लंबी पाली खेलने वालों की जड़ें हमेशा इतिहास की गहरी समझ से जुड़ी रही हैं। जवाहर लाल नेहरू यद्यपि विज्ञान के विद्यार्थी थे, लेकिन इतिहास के अध्येता और लेखक के रूप में उनका स्थापित यश बेमिसाल रहा है।

सन् 1942 में गांधी के नेतृत्व की अगस्त क्रांति के साथ भी नेहरू का गहरा पूर्ण समर्पण और गहरा तादात्म्य था। स्वतंत्रता के उस निर्णायक संघर्ष के बाद अर्जित आजादी के संहिताकरण द्वारा विश्व के विशालतम भारतीय लोकतंत्र की स्थापना एवं सुदृढ़ विकास को नेतृत्व प्रदान करने वाले उसके संस्थापक प्रधानमंत्री के रूप में नेहरू की भूमिका महनीय थी। साम्यवादियों और समाजवादियों द्वारा संविधान सभा के बायकाट के बावजूद, उन्होंने सभी राजनीतिक घटकों को उस महान युगदायित्व से यथासंभव और यथासामर्थ्य जोड़ा। उन्होंने

सांस्कृतिक बहुलवाद और उस बहुलता में एकता की नींव पर राष्ट्र की परिकल्पना और राष्ट्र निर्माण के सुदृढ़ सिलसिले को आगे बढ़ाया। किसी खास धर्म व धर्म संस्कृति विशेष की पद–पादशाही की सोच के विपरीत और भेदभावरहित एक समावेशी भारत की परिकल्पना को महत्ता देते हुए उन्होंने राष्ट्रीय जीवन में हर व्यक्ति की गरिमा सुनिश्चित करने पर बल दिया।

नेहरू ने भारत में महत्वपूर्ण लोकतांत्रिक, वैज्ञानिक, प्रौद्योगिक, शैक्षणिक, औद्योगिक संस्थानों की मजबूत बुनियाद रखी। देश को उन सब संस्थानों पर गौरव रहा है। आधुनिक भारत निर्माण में उन सबकी भूमिका सारी दुनिया में सराही जाती रही है। आज देश में ऐसे हर गौरवशाली संस्थान या प्रतिष्ठान के पीछे कोई व्यक्ति सबसे अधिक है, तो वह बेशक नेहरू हैं। उन्होंने एक ओर बड़े बुनियादी उद्योग एवं उद्यम संस्थान खड़े किये, तो दूसरी ओर लघु, कुटीर व हस्त उद्यमों तथा सामुदायिक विकास एवं सहकारी आन्दोलन के कार्यक्रमों को भी शुरू किया और बढ़ावा दिया। सार्वजनिक क्षेत्र और निजी क्षेत्र को समान महत्ता एवं प्रोत्साहन के साथ देश को मिश्रित अर्थ व्यवस्था के मध्यमार्ग पर लेकर चले। इस्पात उत्पादन रहित भारत में भिलाई, बोकारो, राउरकेला सदृश्य प्रतिष्ठान और आईआईटी, एम्स, आईआईएम सरीखे मानव संसाधन निर्माण के शैक्षिक संस्थान खड़े किये। इस तरह सूई तक बना पाने में असमर्थ देश को त्वरित औद्योगिक विकास की राह पर दौड़ाने की एक युगान्तकारी पहल की। नियोजित विकास के साथ ही, नेहरू विकास में आम लोगों की भागीदारी के पक्षधर थे। वैदिक काल से गांधी के विश्वासों तक चली आई भारत की परंपरागत पंचायत प्रणाली को सामंती प्रभाव की ग्रामीण सामाजिक संरचना ढहाये बिना लोकतांत्रिक कसौटियों पर परवान नहीं चढ़ाया जा सकता था। फलतः संविधान निर्माण के वक्त इसे तवज्जो नहीं मिल सकी थी और यह लक्ष्य नीति निर्देशक तत्वों में शामिल किया गया, फिर भी नेहरू ने ज्यादा प्रतीक्षा नहीं की। राजशाही के उपरांत जमींदारी के सामंती ढांचे को ढहाया और उसके बाद भारतीय समाज एवं संस्कृति की परम्परा में रची बसी पंचायत प्रणाली को पंचायतीराज की त्रिस्तरीय संरचना में

ढाल कर देश के आधुनिक संवैधानिक लोकतंत्र के ढांचे में पिरोया। राजस्थान से उनके द्वारा उद्घाटित पंचायतीराज प्रणाली देखते–देखते पूरे देश में लोकतंत्र की धरातलीय इकाईयों के रूप में छा गई। विदेश नीति के मोर्चे पर भी नेहरू की बनाई लीक का भारतीय विदेश नीति में स्थायी महत्व बना रहा।

नेहरू भारत में लोकप्रिय नेतृत्व की मिसाल थे। उन्हें हिन्दुस्तान की आवाम की आंखों का नूर कहा जाता था। आज नेहरू के कृतित्व और उनके स्थापित यश को धूमिल करने के सुनियोजित अभियान भी चलाये जाते हैं, लेकिन नेहरू का यश देश और दुनिया में कायम है। लोकतंत्र में असहमतियों एवं आलोचनाओं की पूरी गुंजाइश होती है और नेहरू उसके कायल थे। वह मानते थे कि काम करने वाला गलतियां भी कर सकता है और उसकी आलोचना एक स्वस्थ एवं परिपक्व लोकतंत्र की बुनियादी शर्त होती है।

अतः नेहरू की आलोचना और नेहरू के व्यक्तित्व और कर्तृत्व के सम्यक् मूल्यांकन का राजनीति शास्त्रीय महत्व है। इस दृष्टि से राजनीति शास्त्री डॉ. गौरव त्रिपाठी एवं समाजशास्त्री डॉ. संगीता सिन्हा द्वारा सम्पादित इस ग्रंथ "नेहरू : व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व–एक पड़ताल" का शास्त्रीय महत्व लाजिमी है। मैं इस अभिनन्दनीय पहल के लिये उन्हें साधुवाद देता हूँ और आशा करता हूँ कि यह संग्रथन राजनीति के शास्त्रीय अध्येता, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों के लिये उपादेय भूमिका निभायेगा।

दिनांक

27 मार्च 2021
पूर्णिमा फाल्गुन मास

प्रो. सतीश कुमार
राष्ट्रीय समन्वयक – राजीव गांधी स्टडी सर्कल,
पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष – राजनीति विज्ञान विभाग,
पूर्व निदेशक – नेहरू अध्ययन केन्द्र,
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी, उ0प्र0।

नमूना • SAMPLE

आमुख

पं० जवाहर लाल नेहरू ने भारत की आजादी के बाद लगभग 17 वर्षों तक देश का नेतृत्व किया, साथ ही भारत और भारत के लोगों पर गहरी छाप छोड़ी। उनकी आर्थिक नीतियां हो, धर्मनिरपेक्षता पर उनके विचार हो, गुटनिरपेक्षता का सफल प्रयोग हो या फिर चीन के संबंध में उनकी नीतियां हो ये सभी इक्कीसवीं सदी में भी लोगों का ध्यान आकर्षित कर रहे हैं। अकादमिक स्तर पर भी नेहरू के नीतियों और विचारों की विवेचना, आलोचना और व्याख्या लगातार की जाती रही है। मुझे हर्ष हैं कि एक बार फिर इस पुस्तक के माध्यम से नेहरू के व्यक्तित्व, विचारों और कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है।

नेहरू का व्यक्तित्व किसी व्यक्ति विशेष के गुणों का समुच्चय मात्र नहीं है बल्कि समय और परिस्थितियों के अनुसार सतत सृजित अनुभवों और आत्मबोध की लम्बी श्रृंखला है। हम सभी जानते हैं कि नेहरू का जन्म एक सम्पन्न परिवार में हुआ, उन्हें विदेश में शिक्षित होने का अवसर मिला, विधि की पढ़ाई करके वह वकालत से भी जुड़े लेकिन ये उनका अनुभवजन्य आत्मबोध ही था कि वो वकालत से लम्बे समय तक नहीं जुड़ सके। पाश्चात्य शिक्षा के अलावा पश्चिम में उभर रहे लोकतांत्रिक स्वरूप, स्वतंत्रता और समानता की विचारधाराओं ने उस समय के तमाम बुद्धिजीवियों के तरह ही इन पर भी प्रभाव डाला। हमें ये भी याद रखना होगा कि 1919 में हुए जलियाँवाला बाग की घटना ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलनों और क्रांतिकारी गतिविधियों के लिए ईंधन का काम किया साथ ही देश के तमाम युवाओं, शिक्षितों और बुद्धिजीवियों

SAMPLE

को स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु प्रेरित किया। इसी घटना ने नेहरू जी को भी उद्वेलित किया और 1919 में ही ये भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से जुड़े।

अपने शुरूआति दौर में पं० नेहरू अवध के किसान आंदोलन से जुड़े। 1920 में हुए किसान सभा आंदोलन को संगठित करने का श्रेय इन्हें ही जाता है। इस आंदोलन की यह उपलब्धि ही थी कि यह आंदोलन प्रतापगढ़ से शुरू होकर सुल्तानपुर, रायबरेली और फैजाबाद तक फैल गया। यहां किसान आंदोलन के जिक्र का उद्देश्य नेहरू के व्यक्तित्व को उजागर करना है कि नेहरू भले ही सम्पन्न परिवार से संबंध रखते हों लेकिन उन्होंने अपनी राजनीतिक यात्रा सर्वसाधारण से शुरू की और देश के जनमानस से जुड़कर देश को समझा। इसके बाद 1920 में ही असहयोग आंदोलन के समय नेहरू भारतीय राजनीति में उभर कर आए और जेल भी गए। इसके बाद 1929 में लाहौर अधिवेशन की अध्यक्षता करते हुए नेहरू ने पहली बार पूर्ण स्वराज को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का लक्ष्य घोषित किया। नेहरू तत्कालीन परिथितियों को भली–भांति समझते थे। नेहरू जानते थे कि देश और विशेषकर देश का युवावर्ग अपनी अधिकारों के प्रति जागरुक और विचारों से स्वतंत्र हो चुका है। वह समझ चुके थे कि डोमीनियन स्टेटस उस समाज के साथ अन्याय होगा जो अपनी स्वतंत्र चेतना को मूर्त रूप देना चाहता है और जिसका उद्देश्य पूर्ण स्वराज से कम कुछ नहीं है।

इसके बाद भी वे 1936, 1937 और 1948 में कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान वो लगभग तीन साल जेल में रहे लेकिन जेल से रिहा होने के बाद वे एक प्रखर वक्ता के रूप में उभरे जिन्होंने अनेक अवसरों पर ब्रिटिश सरकार के सामने भारत का पक्ष मजबूती से रखा। नेहरू भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के एक जोशीले नायक थे जो अपनी ऊर्जा का स्त्रोत आंदोलनों, यात्राओं, किताबों, प्रतीकों आदि में खोज लेते थे। उन्होंने ने राष्ट्रीय ध्वज के संबंध में अपने संस्मरण को संदर्भित करते हुए कहा था कि, "मुझे याद है और इस सदन में बहुत सारे लोगों को अच्छी तरह याद होगा कि हम इस झंडे को न सिर्फ गुरूर और जोश से देखते थे बल्कि इसको देखते समय

हमारी नसें फड़कने लगती थीं, जब हमारे हौंसले पस्त होते थे और कंधे झुक जाते थे तो इसे देख कर हमे एक बार फिर आगे बढ़ने का हौंसला मिलता था।" पं० नेहरू देश के पहले प्रधानमंत्री ही नहीं रहे बल्कि उन्होंने स्वतंत्र भारत की दशा और दिशा भी निर्धारित किया इसी कारण उन्हें आधुनिक भारत का शिल्पकार कहा गया। उन्होंने औद्योगिकीकरण को बढ़ावा दिया जो देश में 1951 में पंचवर्षीय योजना के साथ प्रारंभ हुआ। पं० नेहरू ने वैज्ञानिक और तकनीकी आधुनिकीकरण को भी प्रोत्साहन दिया, वह मानते थे कि आने वाला समय विज्ञान और उनका है जिन्होंने इसे स्वीकार किया है। भारत के संदर्भ में उन्होंने लोकतंत्र, समाजवाद और धर्मनिर्पेक्षता का समर्थन किया।

निर्विवाद रूप से नेहरू राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त नेता थे लेकिन यह भी सत्य है कि वो कोई बहुत बड़े राजनीतिक विचारक नहीं थे जिन्हें हम मैक्यावली, हेगल, मार्क्स जैसे विचारकों की श्रेणी में रख सकें, फिर भी उनके लेख, रचनाओं के अलावा संसद, राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय या सार्वजनिक मंचों पर दिए गए उनके भाषणों के माध्यम से ही हम उनके राजनीतिक विचारो को जानते और समझते हैं। इस पुस्तक के लेखों में भी पं० नेहरू के व्यक्तित्व के साथ–साथ लोकतंत्र, समाजवाद, धर्म, धर्मनिरपेक्षता संबंधित उनके विचारों की सूक्ष्म और गंभीर विवेचना कि गई है। लेकिन वर्तमान में इन विषयों से इतर 'राष्ट्रवाद' सार्वजनिक ही नहीं बल्कि अकादमिक चर्चा का भी महत्वपूर्ण विषय रहा है अतः यहां उल्लेख करना आवश्क हो जाता है कि राष्ट्रवाद पर भी नेहरू का स्पष्ट दृष्टिकोण था। हालाँकि उनके पास राष्ट्रवाद का कोई सिद्धांत नही था लेकिन राष्ट्रवाद के संबंध में उनका विचार सांस्कृतिक बहुलतावाद और संश्लेषण की अवधारणा से प्रेरित है। नेहरू के लिए राष्ट्रवाद आत्मबोध का पहला चरण है। वह स्वीकार करते हैं कि राष्ट्रवाद अतीत की उपलब्धियों, परम्पराओं और अनुभवों की एक सामूहिक अनुभूति है। लेकिन वह यह भी कहते है कि राष्ट्रवाद अतीत की अनुभूति के अलावा एक मजबूत राष्ट्र के सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक विकास की नींव भी है। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि नेहरू

का राष्ट्रवाद अतीत के गौरव गान तक ही सीमित नहीं है अपितु एकता, समानता, बंधुत्व, विकास और विज्ञान को भी समाहित करता है।

नेहरू के विचार परिस्थिति जन्य है, उनके परिवेश का ही प्रभाव उनके विचारों पर है। दरअसल केवल नेहरू का व्यक्तित्व ही नहीं बल्कि उनके विचार भी उनके अनुभवों की ही श्रृंखला है। नेहरू का जन्म एक सम्पन्न परिवार में हुआ। वह स्वयं यह स्वीकार करते हैं कि एक बुर्जुआ परिवार में जन्म लेने के कारण पारंपरिक भारतीय बुर्जुआ समाज के पूर्वाग्रह उनकी परवरिश का भी हिस्सा रहे, लेकिन नेहरू ने इन पूर्वाग्रहों को पीछे छोड़ा क्योंकि नेहरू यदि इन पूर्वाग्रहों से आगे न निकलते तो नेहरू कैसे बनते। पं० नेहरू की प्रारंभिक शिक्षा इनके घर पर ही एफ. टी. ब्रुक नाम के एक ट्यूशन टीचर से हुई। ब्रुक ने इन्हें दो अलग–अलग विधाओं थियोसोफी और विज्ञान के माध्यम से प्रभावित किया। नेहरू तेरह साल की उम्र में थियोसोफिकल सोसाईटी के सदस्य भी बने। हालांकि कालांतर में वह थियोसोफी के विचारों से स्वतः ही दूर हो गए लेकिन विज्ञान और वैज्ञानिक सोच उनके व्यक्तित्व का हिस्सा बन गए।

नेहरू में राष्ट्रवाद की चेतना का श्रेय उन्नीसवीं और बीसवीं सदी की राजनैतिक घटनाओं को जाता है। बोअर युद्ध (1899–1902) और रूस–जापान युद्ध (1905) ने उनमें राष्ट्रवाद के विचार को सशक्त किया। वहीं हैरो में अध्ययन करते हुए राष्ट्रवाद के साथ–साथ राजनीतिक एवं अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर इनकी रुचि विकसित हुई। जब नेहरू ने ट्रिनिटि कॉलेज, कैम्ब्रिज में दाखिला लिया तो अध्ययन हेतु विज्ञान के विषयों को चुना लेकिन यही वो नीत्से, जी.बी. शॉ और हैवेलॉक ऐलिस जैसे विचारकों से प्रभावित हुए। यहां तक की नेहरू के नास्तिकता संबंधी विचार पर भी ऑस्कर वाइल्ड और वाल्टर पीटर के विचारों का प्रभाव रहा। ब्रिटेन में पढ़ाई के दौरान ही नेहरू उदारवादी मानववाद की तरफ आकर्षित हुए। बुद्ध के दर्शन से भी नेहरू प्रभवित रहे। एडविन अर्नाल्ड की 'द लाईट ऑफ एशिया' ने इन पर गहरी छाप छोड़ी। नेहरू के पंचशील सिद्धान्त पर बुद्ध के दर्शन का ही प्रभाव है।

नेहरू का जीवन दर्शन हम मुख्यतः उनकी रचना 'द डिस्कवरी ऑफ इंडिया' के माध्यम से पाते हैं। नेहरू दर्शन को मानव समस्याओं के संदर्भ में देखते हैं। उनका मानना है मानव समस्याओं का समाधान खोजना ही किसी भी दर्शन का मुख्य उद्देश्य है। नेहरू ज्ञान की वो सभी विधाएं निरर्थक मानते थे जो मानव सभ्यता के काम नहीं आ सकती, यहां नेहरू स्पष्ट करते हैं कि कोई भी ज्ञान तभी सार्थक है जब उसका वास्तविक जीवन में प्रयोग हो सके। नेहरू के दर्शन संबंधी विचारों से ही उनके आदर्श निकलते हैं वो कहते हैं कि जिन दो आदर्शों को प्राप्त करना अति आवश्यक है वह हैं– मानवतावाद और वैज्ञानिक सोच। नेहरू इन दोनों आदर्शों के संश्लेषण की बात करते हैं जिसके परिणाम स्वरूप वैज्ञानिक मानववाद का आविर्भाव हो सके। कही न कही अपने आदर्श की अवधारणा के द्वारा नेहरू विध्वंसात्मक विज्ञान को नकारते भी हैं।

नेहरू केवल विध्वंसात्मक विज्ञान को ही नहीं बल्कि हर उस तत्व को नकारते थे जो मानव समाज के लिए घातक है, जो उनमें द्वेष फैलाता है, नेहरू भारत के सांप्रदायिक ताकतों से भी वाकिफ थे और चाहते थे कि हिन्दुस्तान उन सारी जंजीरों को तोड़ दे जिनमें वो जकड़ा हुआ है जो उसको आगे बढ़ने से रोकती हैं और देश में रहने वालों में फूट डालती हैं। उन्होंने कहा था कि हमें अपने आपको बार–बार याद दिलाते रहना होगा कि हमारे धर्म चाहे अलग हों लेकिन हम एक हैं। नेहरू को थोड़ा भी पढ़ने और समझने वाला ये जानता है कि नेहरू खुद को धार्मिक तो नहीं मानते थे लेकिन वो किसी अदृश्य सत्ता के विश्वास को नकारते भी नहीं थे। वो मानते थे कि जो विश्वास मनुष्य को उसकी क्षुद्रताओं से छुटकारा पाने में सहायता करता है वह शुभ है। शायद यही विश्वास उनका धर्म था जो उनके लिए उनका नितांत निजी मामला था। इस तरह के शुभ में विश्वास किसी का भी निजी विषय हो सकता है। नेहरू ने सदैव धार्मिक उम्माद का विरोध किया। वो कहते हैं कि अगर कोई व्यक्ति किसी पर धर्म के नाम पर हाथ उठाता है तो मैं जीवन के आखिरी दिन तक उसके खिलाफ रहूंगा। फिर भी नेहरू ये बात अच्छी

तरह समझते थे कि भारत की आत्मा उन्माद में नहीं बल्कि वसुधैव कुटुम्बकम् में बसती है। एक बार नेहरू जी से पूछा गया कि भारत के संदर्भ में आपके लिए सबसे मुश्किल काम क्या है जवाब में उन्होंने कहा, एक धार्मिक समाज में धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र का निर्माण। लेकिन नेहरू भारत की आत्मा से भली–भांति परिचित थे। वो जानते थे भारत भूमि में जय जगत की अवधारणा का क्या महत्व है? इसी कारण भारतीय समाज में धर्मनिरपेक्षता उन्हें मुश्किल लगी हो लेकिन असंभव नहीं लगी।

नेहरू की भारत को सबसे बड़ी देन समाजवाद है। हालांकि नेहरू यह स्वीकार करते हैं कि भारत में समाजवाद लाने वाले वे पहले व्यक्ति नहीं थे भारत में पहले से ही समाजवाद के तत्व मौजूद थे। लेकिन हम इस तथ्य से इंकार नहीं कर सकते कि नेहरू ने ही देश में लोकतांत्रिक समाजवाद की विधिवत् नींव डाली। नेहरू का समाजवाद भी विचारों और अनुभवों का ही परिणाम था जिसके विभिन्न चरण रहे। ब्रिटेन में शिक्षा के दौरान उन्होंने पहली बार समाजवादी विचारधारा को जाना फिर कैम्ब्रिज में जी.बी. शॉ, रसेल और कींस जैसे बुद्धिजीवियों से प्रभावित हुए। यह समाजवाद की तरफ उनका पहला चरण था। दूसरे चरण में 1917 की रूसी क्रांति ने नेहरू को खासा प्रभावित किया फिर गांधी जी के संपर्क में आने के बाद उन्होंने भारत को समझा, साथ ही किसान आंदोलन से जुड़ कर वे देश की वास्तविकता से परिचित हुए। अगले चरण में उनकी यूरोप (1926) और सोवियत रूस (1927) यात्रा रही, जहां बुद्धिजीवियों और आम जनमानस के संपर्क में आने के बाद उन्होंने वर्ग संघर्ष को नए सिरे से समझा और महसूस किया कि भारत का स्वतंत्रता आंदोलन समाजवादी विचारधारा के बिना कितना संकीर्ण है। नेहरू मार्क्स द्वारा की गई मानव सभ्यता के इतिहास की आर्थिक व्याख्या से भी खासे प्रभावित रहे। फिर स्वतंत्रता पश्चात् नेहरू ने अपने समाजवादी विचारों को देश में योजनाओं और नीतियों के माध्यम से लागू किया।

हम पाते हैं कि नेहरू अपने समय के प्रचलित तमाम विचारों से गुजरे और इन सभी विचारों का असर इनके व्यक्तित्व पर दिखता है। नेहरू ने स्वयं यह स्वीकार किया कि मैं प्राच्य और पाश्चात्य का अद्भुत

मिश्रण हूँ। शायद मेरे विचार और मेरे दृष्टिकोण पूर्व की तुलना में पश्चिम के ज्यादा करीब लगें लेकिन जैसे भारत अपने तमाम बच्चों से जुड़ा है वैसे ही भारत मुझसे भी जुड़ा है। मैं अपने अतीत की विरासत और वर्तमान के अधिग्रहणों से छुटकारा नहीं पा सकता। सिर्फ सार्वजनिक जीवन में ही नहीं बल्कि मेरे निजी जीवन में भी ये प्राच्य और पाश्चात्य दोनो ही मेरे हिस्से हैं। ये मेरे जीवन का सत्य है कि पश्चिम के लिए मैं अजनबी हूँ, मैं उनका नहीं हो सकता लेकिन आश्चर्यजनक रूप से यह भी सत्य है कि कभी–कभी मैं अपने ही देश में निर्वासितों सा महसूस करता हूँ। इसी कारण नेहरू स्वीकार करते हैं कि वो किसी एक के नहीं बल्कि सभी विचारों के हैं।

नेहरू राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के ही नहीं बल्कि सर्वसाधारण के भी नेता थे। इनकी राजनीतिक यात्रा किसान आंदोलन से शुरू हुई थी। वह हमेशा देश के आम जनमानस से जुड़े रहना चाहते थे। शायद इसीलिए उन्होंने इच्छा जाहिर की थी कि उनकी मृत्यु के बाद उनकी देह की भस्म का कुछ भाग गंगा में प्रवाहित कर दिया जाए जबकि भस्म के बाकी हिस्से को ऊंचाई पर ले जाकर बिखेर दिया जाए, उन खेतों पर जहां भारत के किसान मेहनत करते हैं। मेरा मानना है कि नेहरू को पढ़ना सिर्फ इसलिए जरूरी नहीं कि हम उन्हें जान सकें बल्कि इसलिए भी जरूरी है कि हम अपने देश को समझ सकें।

मैं इस पुस्तक के लेखकों और संपादकों को अपना साधुवाद प्रकट करते हुए शुभकामनाएं देती हूँ जिन्होंने नेहरू के व्यक्तित्व, कृतित्व और उनके विचारो का सूक्ष्म विश्लेषण किया है। साथ ही आशा करती हूँ कि इस पुस्तक के माध्यम से पाठक पं० नेहरू को समझेंगे और नये सिरे से नये संदर्भ पाएंगे।

दिनांक
29 मार्च 2021
रंगोत्सव, फाल्गुन मास।

प्रो. डॉ. हेमलता मिश्रा
पिथौरागढ़, उत्तराखण्ड।

नमूना • SAMPLE

संपादकीय

वर्ष 2010 के आस–पास से भारत में सोशल मीडिया का प्रयोग आम जन–मानस करने लगा था। सोशल मीडिया ने आम जन तक खास जानकारी सहज रूप से उपलब्ध कराना शुरू कर दिया परिणामस्वरूप इस प्लेटफार्म से लोग सूचना ले और दे रहे थे। इन्हीं सूचनाओं के प्रचालन में कुछ मनगढंत प्रश्न व उत्तर प्रचालित होने लगे जिससे भारत की गौरवशाली विरासत/व्यक्तित्वों को ठेस पहुँचना शुरू हुआ तथा नयी पीढ़ियों का भ्रामक व असत् ज्ञान से साक्षात्कार होने लगा। इन्हीं गौरवशाली व्यक्तियों में एक महान व्यक्तित्व के स्वामी पं. जवाहर लाल नेहरू भी हैं। पं. नेहरू के संदर्भ में बहुत से मनगढ़ंत तथ्यों का प्रचालन सोशल मीडिया पर प्रारंभ हुआ और नयी पीढ़ियों को प्रभावित करने लगा। पं. नेहरू के संदर्भ में कुछ इस प्रकार के मिथ्या तथ्य जैसे – पं. नेहरू का सबंध इस्लाम से है, पं. नेहरू के वजह से कश्मीर समस्या है आदि उत्पन्न हुए। इन प्रश्नों का समाधान कर नयी पीढी का मार्गदर्शन करना विद्वत्जनों का महत्वपूर्ण दायित्व है। एतदर्थ मैंने 'पं. नेहरू व्यक्तित्व व कर्तृत्व : एक पड़ताल' विषयक पुस्तक के संपादन निर्णय लिया।

पं. नेहरू कोई मुसलमान नहीं थे। उनके पूर्वज कश्मीरी कौल हिन्दू थे। फर्रुखसियर के कहने पर उनके पूर्वज राज कौल जो संस्कृत व फारसी के विद्वान थे, दिल्ली आये। दिल्ली में आकर नहर के किनारे स्थित मकान में रहने लगे तथा इसी नहर शब्द से नेहरू शब्द आया। परिणामस्वरूप इनके पूर्वजों ने नाम के अंत में कौल नेहरू शब्द का

SAMPLE

प्रयोग करना प्रारंभ कर दिया। कालांतर में कौल शब्द समाप्त हो गया और नेहरू ही प्रचलन में रह गया। पं. नेहरू के परदादा लक्ष्मी नारायण कौल जहाँ कंपनी के प्रथम सरकारी वकील थे वही दादा गंगाधर नेहरू 1857 के आंदोलन के पूर्व कोतवाल पद पर आसीन रहे। 1857 की क्रांति में नेहरू परिवार की आर्थिक हैसियत तहस–नहस हो गयी, परिणामतः यह परिवार दिल्ली से जाकर आगरा में बस गया और वहीं पं. नेहरू के पिता का जन्म 1861 में हुआ। पं. नेहरू के पिता का लालन–पालन करने वाले उनके भाइयों (वंशीधर नेहरू व नंदलाल नेहरू) में से नंदलाल नेहरू हाईकोर्ट में प्रैक्टिस करते थे और जब हाईकोर्ट इलाहाबाद में स्थानांतरित हुआ तब नेहरू परिवार इलाहाबाद में आकर स्थापित हो गया। पं. नेहरू का जन्म 14 नवंबर 1889 को मार्गशीर्ष सप्तमी संवत 1946 को इलाहाबाद में ही हुआ। पं. नेहरू बचपन में अपनी माता व पिता के मुंशी मुबारक अली (निवासी बदायूँ) के निकट थे। मुंशी मुबारक अली से ही वह गदर क्रांति के बारे में कहानियों के माध्यम से जानकारी प्राप्त किया।

पं. नेहरू सदैव अग्रगामी सोच के व्यक्ति थे। वह बचपन में ही डान क्विकजोट, फारदेस्ट नार्थ, लुई कैरोल, किप्लिंग, एच. जी. वेल्स, मार्क ट्वेन, शालकिहोम्स, जेरोम के जोसेफ़ आदि की पुस्तकों को पढ़ डाला था। पं. नेहरू बहुत ही उत्सवधर्मी व्यक्ति थे। वे चाहते थे कि उनका जन्म दिन एक वर्ष में कई बार मनाया जाय किंतु ऐसा संभव नहीं हो पाने पर वे उदास व निराश हो जाते थे। पं. नेहरू 10 वर्ष की आयु में आनंद भवन में रहने आ गये थे तथा बोअर युद्धों में रूचि के कारण अखबारों को गंभीरता से पढना प्रारंभ कर दिया था। जब नेहरू को बहन पैदा हुयी था डाक्टर ने कहा कि मुबारक हो आपको बहन हुयी और आपके जायदाद में हिस्सा नहीं लेगी। इस बात पर पं. नेहरू क्रोधित हुए। उनका मानना था कि स्त्री पुरुष समान हैं। वे स्त्री पुरूष संबंधों को भी सदाचार व दुराचार से परे मानते थे, जिसके पीछे नीत्शे, बर्नार्ड शा व डिकिंसन पर गंभीर अध्ययन व बहस कारण था।

पं. नेहरू में बचपन से ही राजनीति के प्रति दिलचस्पी रही। जब हैरो में पं. नेहरू अध्ययन कर रहे थे तो 1905 में लिबरल के जीत पर

एक वर्ष बाद हैरों के प्राध्यापक ने जब कक्षा में प्रश्न पूछा तब पं. नेहरू अकेले छात्र थे जिन्होंने ने जवाब दिया। हैरो में रहते हुए पं. नेहरू जी. एम. ट्रवेलियन व गैरी बाल्डी का अध्ययन कर डाला जिससे उनमें आजादी के प्रति बहादुरी से लड़ाई का भाव पैदा हुआ। कैंब्रिज में रहने के दौरान विपिन चन्द्र पाल, लाला लाजपत राय व गोपाल कृष्ण गोखले के भाषणों ने पं. नेहरू को प्रभावित किया। विलक्षण प्रतिभा के धनी पं. नेहरू 20 वर्ष की आयु में अर्थात् वर्ष 1910 में ही कैंब्रिज से बैरिस्टरी उत्तीर्ण कर लिया।

पं. नेहरू भारत में प्रथम भाषण वर्ष 1915 में इलाहाबाद में टी. वी. सप्रु की उपस्थिति में दिया। जब पं नेहरू राष्ट्रीय आंदोलन में सम्मिलित होने की बात पिता से बताया तो पिता कई रात सो न सके तथा जेल में होने वाले कष्टों को अपने ऊपर अजमाकर पं. नेहरू को समझाने का प्रयास किया। पं नेहरू के न मानने पर उन्होंने गांधी जी को इलाहाबाद बुलवाकर समझाने का प्रयास किया। पं. नेहरू के ऊपर यह आरोप लगाया जाता है कि उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन में सुविधाभोगी भूमिकाओं का निर्वहन किया। यहाँ आक्षेपकर्ता यह भूल जाते है कि साइमन कमीशन के लखनऊ आगमन के विरोध में जो प्रदर्शन आयोजित हुआ उसमें पं नेहरू भी चारबाग में शामिल थे और उन पर लाठियों से जो तगड़ा प्रहार किया गया उससे उनके आंखों के सामने अंधेरा छा गया किंतु गाँधी जी के अहिंसा पाठ से बंधकर सामने वाले पर हाथ तक न उठाया। पं. नेहरू ने अवध के किसान आंदोलन जिसमें प्रतापगढ़ का किसान आंदोलन उल्लेखनीय था, का भी नेतृत्व किया। असहयोग आंदोलन के दौरान जब पं. नेहरू जेल से रिहा होकर आनंद भवन आये तो उन्होंने अंग्रेजी दोस्तों के घर आने पर प्रतिबंध लगा दिया था। विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार हेतु दुकानों पर धरना शुरू कर दिया। इस कार्य हेतु उन्हे गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया।

आज के दौर में भारत माता की जय का प्रचलन सभाओं में बढ गया है। यह नारे व प्रतीक राष्ट्रवादी होने के पैमाने बन गये हैं। पं. नेहरू का भारत माता के विषय में दृष्टिकोण स्पष्ट था वे पंजाब की एक जनसभा में भारत माता की जय बोलते हुए कहा कि यह कोई पर्वत,

नदी, खेत व खलिहान नहीं है। इसका तात्पर्य भारत में रहने वाले लोगों से हैं अर्थात भारत माता की जय का मतलब देश के निवासियों की जय से है तथा सच्ची जय तभी होगी जब हम गरीबी, भुखमरी और अशिक्षा पर विजय प्राप्त करेगें। जब वे किसी परियोजना का उद्घाटन करने जाते तो वहाँ पर मजदूरी करने वाले लोगों को बुलाकर उद्घाटन करवाते थे। उनका मत था कि मजदूर भारत का निर्माण कर रहा है और उसको ही वे असली भारत माता मानते थे। पं. नेहरू कभी भी गलत बात पर लोगो को फटकारने से झिझकते नहीं थे यही कारण है जब एक जत्था मुस्लिमों के सामान लूट कर गाँधी, नेहरू व भारतमाता की जयघोष कर रहा था तब नेहरू ने कहा कि गाँधी की जय बोलते हुए तुमको शर्म आनी चाहिए।

चर्चिल ने कहा था कि अगर अंग्रेजी शासन भारत से समाप्त हो जाय तो भारतीय इस देश का संचालन नही कर सकेगें। ये जाहिल लोग आपस में ही लड़ मरेगें और देश के सैकड़ों टुकड़े कर देगें। पं. नेहरू के विचारों व कार्यों ने चर्चिल के घोषणा को निर्मूल साबित कर दिया। वे सदैव कहते थे कि आप सरकार की निंदा करिये तथा उसकी कमियों को उजागर करिये तथा मौका आने पर उसे सत्ता से हटा दीजिये, किंतु ऐसा कोई काम मत कीजिये जिससे हिन्दुस्तान कमजोर हो। वे देश को एक परिवार मानते थे जिसके 36 करोड़ सदस्य हैं। इस परिवार में जातीयता व सांप्रदायिकता एक दीवार का काम करते हैं। वे इस दीवार को उखाड़ फेंकने की बात करते थे क्योंकि यह देश को कमजोर व दुर्बल बना रहा है।

जब देश के किसी हिस्से में कही भी हिंसा होती है तो पं. नेहरू हम सबको बरबस याद आते हैं। वे कहते थे कि हमने दुश्मनों अर्थात शेरों पर फतह कर लिया पर पीछे से आकर सांप डस रहे हैं। सांप से उनका तात्पर्य अपनी कमजोरियों से है। हिंसा का मतलब है कि हम अपनी कमजोरियों से पराजित हो रहे हैं।

पं. नेहरू सदैव ही प्रासांगिक रहेगे। इसका कारण उनकी विवेकशीलता व दूरदृष्टि है। अभी आप सभी को याद होगा कि कुछ दिन पहले

सिनेमाघरों में राष्ट्र गान बजाया जाता था और उसके प्रोटोकॉल में सभी खड़े होते थे किंतु कुछ दिन बाद सिनेमाघरों में राष्ट्र गान बजना बंद हो गया क्योंकि यह व्यवहारिक नहीं था। इस विषय में पं. नेहरू ने पहले ही कहा था कि सिनेमा के अंत में लोग जाने की जल्दबाजी में होते हैं अतएव उसके प्रोटोकॉल का पालन व्यवहारिक नहीं है। सिनेमाघरों को सिनेमा के अंत में राष्ट्र गान की जगह राष्ट्र ध्वज दिखलाना चाहिए।

नेहरू सदैव तृणमूल लोकतंत्र के पोषक रहे। यही कारण है कि उन्होंने 1952 में नागौर में सामुदायिक विकास योजना का उद्घाटन कर प्रत्येक व्यक्ति को शासन कार्य में भागीदार बनाने का प्रयत्न किया। नेहरू का हिंदुस्तान दिल्ली में नहीं अपितु गाँवों में बसता है। उनका कहना था कि जब गांव उठता है, जगता बढ़ता है तब बंबई कलकत्ता आगे बढ़ता है। उन्होंने मेहनत करने हेतु सभी को ताकीद किया और अन्य देशों से तुलनात्मक अध्ययन कर स्पष्ट किया कि हमें उन देशों जैसे रूस, चीन आदि से सीखना चाहिए। वे कहते थे कि भारत में जितना अवकाश होता है उतना अवकाश विश्व में कहीं नही होता। भारत केवल काम से आगे बढ़ेगा।

जब चुनाव सभाओं में आज के नेतागण भाषण करते हुए अन्यों पर व्यक्तिगत हमले करते हैं तब पं. नेहरू की बातें याद आती है। वे कहते थे कि चुनाव अभियान का स्वरूप चाहे जैसा हो अर्थात् लिखित हो या मौखिक, इतना याद रखना चाहिए कि उसमें व्यक्तिगत बातें न होकर नीतियों एवं कार्यक्रम की चर्चा होनी चाहिए। उन्होंने सुझाव दिया कि चुनाव परिणाम जो भी आये उसे सहज भाव से स्वीकार करना चाहिए।

पं. नेहरू भाषा के मुद्दे पर अत्यंत संवेदनशील थे। वे सरदार पटेल की भांति आल इंडिया रेडियो को पत्र लिखकर कहा कि ऐसी भाषा का प्रयोग हो जिसे सब समझ सकें अर्थात् हिंदुस्तानी का प्रयोग हो। पं. नेहरू ने संविधान के हिंदी अनुवाद के अवसर पर कहा कि मैं चाहता हूँ कि हिंदी विकास करके पूरे देश की आवाज़ बने लेकिन कुछ लोग उसके विकास का ऐसा तरीका अपना रहे हैं उसकी जीवंतता ही समाप्त हो जायेगी तथा उसमें ठहराव आ जायेगा। पं. नेहरू इस बात पर सदैव

बल देते रहे कि हिंदी का विकास किसी दूसरी भाषा की कीमत पर नहीं होना चाहिए।

पं. नेहरू पर आये दिन आरोप लगाया जाता है कि कश्मीर समस्या उनकी देन है तथा उन्होंने कश्मीर मुद्दे पर सरदार पटेल को हस्तक्षेप करने से रोक दिया था। यह आरोप कतई उचित नहीं है। नेहरू की दृष्टि कश्मीर के प्रति स्पष्ट थी। कश्मीर के प्रति उनका लगाव इस नाते नहीं था कि वह उनके पूर्वजों की भूमि थी अपितु वे यह जानते थे कि कश्मीर का अन्तर्राष्ट्रीय महत्व है। इस महत्व को ख्रुश्चेव के इस वाक्य से समझा जा सकता है कि हमें आप चोटी से आवाज देकर बुला सकते हैं। नेहरू ने इंदिरा को पत्र में बताया था कि भारत में सिकंदर का प्रवेश इसी रास्ते से हुआ था। वे यह भली भाँति जानते थे कि यह क्षेत्र यदि पाकिस्तान के हाथ में चला गया तो विदेशी ताकतें भारत को अस्थिर करती रहेंगी। पं. नेहरू ने संविधान सभा में कहा था कि कश्मीर के प्रश्न को हिंदू मुसलमान के चश्मे से नहीं देखा जाना चाहिए जैसा कि पाकिस्तान चिल्ला रहा है। यह बात आप निश्चित जानिये कि यदि हमें कश्मीर की आवाम का साथ न मिला होता तो हम वहाँ से कबाइलियों को परास्त न कर पाते। कश्मीर के आवाम का यह सहयोग वहाँ के लोकप्रिय नेता शेख अब्दुल्ला की वजह से मिला था। शेख अब्दुल्ला पं. नेहरू के प्रयास से कैद से रिहा हुए थे और शेख अब्दुल्ला ने अपने प्रथम भाषण में कहा कि हमारा पाकिस्तान के नारें में कोई विश्वास नहीं है। शेख अब्दुल्ला कोई एकाएक नेता नहीं बने थे अपितु 1932 से वह सक्रिय हो गये थे। कालांतर में नेहरू के प्रभाव के कारण धर्मनिरपेक्षता को स्वीकार करते हुए अपनी पार्टी के नाम से मुस्लिम शब्द हटाकर नेशनल शब्द जोड़कर नेशनल कांफ्रेंस रख लिया। जब कश्मीर में राजा हटाओ का आंदोलन शेख अब्दुल्ला ने चलाया तब वे गिरफ्तार कर लिए गये। इसी सिलसिले में पुनः पं. नेहरू से शेख अब्दुल्ला की मुलाकात हुई तथा पं. नेहरू ने उनके मुकदमें की पैरवी कर रिहा कराया। जेल में बंद रहने के दौरान पं. नेहरू ने ही उनके बेटे फारूख अब्दुल्ला के पढ़ने की व्यवस्था किया। इस प्रकार शेख अब्दुल्ला पं. नेहरू के प्रभाव में आ गये

थे। जब महाराज हरि सिंह ने विलय पत्र पर हस्ताक्षर किया यदि उस समय कश्मीरी आवाम साथ न देती तो इनका भी हश्र वही होता जो जूनागढ/हैदराबाद के निजाम का हुआ। उस कश्मीर की जनता के तरफ से शेख अब्दुल्ला खड़े हुए जो पं. नेहरू के प्रभाव में थे। इस प्रकार स्पष्ट है कि बिना पं. नेहरू के कश्मीर का विलय नहीं कराया जा सकता है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि सरदार पटेल का जम्मू व कश्मीर के विषय में सदैव हस्तक्षेप बना रहा। जब माउंटबेटन कश्मीर के साथ समझौता कर रहे थे तो सरदार पटेल ने उनके मार्फत पाकिस्तान में मिलने का विकल्प दिलवाया था। सरदार पटेल सदैव वहां के प्रधानमंत्री रामचंद्र काक के संपर्क में रहते थे। उनके पदच्युत के बाद वहां जस्टिस मेहरचंद महाजन का अन्तरिम प्रधानमंत्री के रूप में चयन सरदार पटेल ने ही कराया था। इस प्रकार यह आरोप लगाना कि पं. नेहरू जम्मू व कश्मीर से पटेल को अलग–थलग कर दिया था, बेमानी है।

आज यह पुस्तक जब प्रकाशित होने की स्थिति में है तब पुस्तक के इस स्वरूप में लाने वाले सभी विद्वत्जनों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करना हमारा परम धर्म है। इस क्रम में हमारी पुस्तक हेतु पूर्व पीठिका व आमुख लिखने वाले विद्वान प्रो॰ सतीश कुमार एवं विदुषी प्रो॰ हेमलता मिश्रा के प्रति हम कृतज्ञ है जिन्होंने हमारे एक निवेदन पर इस गुरूतर दायित्व का निर्वहन किया। हम इस अवसर पर निदेशक उच्च शिक्षा, उ.प्र. प्रो॰ डॉ॰ अमित भारद्वाज जी, संयुक्त शिक्षा निदेशक प्रो॰ डॉ॰ एच. पी. सिंह जी, सहायक निदेशक डॉ॰ बी. एल. शर्मा जी के प्रति आभार ज्ञापित करना हमारा दायित्व एवं धर्म है क्योंकि आप जैसे विद्वान अधिकारियों ने राजकीय महाविद्यालयों में इस प्रकार के बौद्धिक कार्यों को करने हेतु उपयुक्त वातावरण का सृजन किया है। इसी क्रम में प्राचार्य डॉ॰ एस.के.एस. पांडेय जी, प्राचार्य डॉ॰ पी. एन. डोंगरे जी, प्राचार्य डॉ॰ सविता भारद्वाज जी, प्राचार्य डॉ. अपर्णा मिश्रा जी, कुलपति डॉ॰ श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी जी, कुलपति प्रो॰ डॉ॰ संजीव शर्मा जी, प्रो॰ डॉ॰ गोपाल प्रसाद जी, प्रो॰ डॉ॰ निशा जायसवाल जी, प्रो॰ डॉ॰ सुधांशु त्रिपाठी जी, प्रो॰ डॉ॰ वृजेष सिंह जी, प्रो॰ डॉ॰ मो. आरिफ जी, प्रो॰ डॉ॰ पंकज कुमार

जी, प्रो॰ डॉ॰ अनुराधा कुमार जी, प्रो॰ डॉ॰ आशीष सक्सेना जी, प्रो॰ डॉ॰ बी. के. राय जी, प्रो॰ डॉ॰ अनुपम पाण्डेय जी, प्रो॰ डॉ॰ सूर्यभान जी, डॉ॰ महेंद्र सिंह जी, डॉ॰ रेशमलाल जी, डॉ॰ अतुल कुमार पाण्डेय जी, डॉ॰ डी. के. राजपूत जी, डॉ॰ धीरेन्द्र सिंह जी, डॉ॰ अवधेश कुमार मिश्रा जी, डॉ॰ मिथिलेश सिंह जी, डॉ॰ रमाकांत गौड़ जी, डॉ॰ मृत्युंजय सिंह जी एवं सहायक निदेशक डॉ॰ त्रिविक्रम तिवारी जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ क्योंकि इन सब विद्वत्जनों के आशीर्वाद व प्रेरणा से यह कार्य मैं कर सका। इसी क्रम में हम शिवमूर्ति तिवारी जी, डॉ॰ लालजी त्रिपाठी जी, डॉ॰ कमला कांत त्रिपाठी जी, श्रीमती कल्पना त्रिपाठी जी के प्रति भी कृतज्ञ हैं जो सदैव ऐसे कार्य को करने हेतु प्रेरित करते रहते हैं। इस कार्य को करने में श्रीमती प्रतिज्ञा त्रिपाठी जी ने बहुत सहयोग दिया, उनके प्रति भी हम कृतज्ञ हैं। हम अपने प्रकाशक अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस के स्वामी श्री विरेन्द्र कुमार यादव जी के प्रति आभारी हैं, जिन्होंने बड़े मनोयोग से कार्य करके आपके सम्मुख हमारी पाडुलिपि को पुस्तक रूप में प्रस्तुत किया।

डॉ॰ गौरव त्रिपाठी, डॉ॰ संगीता सिन्हा

विषय–सूची

	समर्पण	*v*
	पुरोवाक्	*vii*
	आमुख	*xvii*
	संपादकीय	*xxv*
1.	पं0 नेहरू का लोकतंत्र एवं धर्म *—डॉ. राजीव दुबे*	1
2.	जवाहरलाल नेहरू और सांप्रदायिकता : एक अवलोकन *—डॉ. विशाखा सिंह*	13
3.	नेहरु दर्शन में अंतर्राष्ट्रीयतावाद *—भरत मौर्य, मोनिका कुमारी*	27
4.	आधुनिक भारत और पं0 नेहरू *—सना उन्निसा*	37
5.	लोकतंत्र और विदेश नीति के विशेष संदर्भ में पं0 नेहरू *—जितेन्द्र दत्त त्रिपाठी*	42
6.	पं. नेहरू की विविध दृष्टि : एक विश्लेषण *—डॉ. पुनीत कुमार*	64
7.	पं0 नेहरू और लोकतंत्र *—डॉ. पवन कुमार शर्मा*	74

SAMPLE

8. आधुनिक भारत के विकास में नेहरू जी का योगदान 85
—*डॉ. मंजू आर्या*

9. पं. जवाहरलाल नेहरू और लोकतान्त्रिक समाजवाद 94
—*संदीप कुमार आदित्य*

10. नेहरू की दृष्टि में आदिवासी विकास 108
—*डॉ. शीतल मीना*

11. अनुच्छेद 370 की समाप्ति : स्वप्न से यथार्थ तक 119
—*बालेश्वर प्रसाद*

12. गुटनिरपेक्षता, विदेश नीति और पं0 नेहरू 168
—*डॉ. प्रीति त्रिवेदी*

13. आधुनिक भारत के शिल्पी : पं0 नेहरू 183
—*सुमन शुक्ला*

14. पं0 जवाहरलाल नेहरू एवं उनका वैचारिक दृष्टिकोण 201
—*डॉ. हेमाराम*

15. पं0 नेहरू और विदेश नीति 210
—*गजा नन्द शर्मा*

16. भारत निर्माण में पं0 नेहरू के योगदान की समीक्षा 221
—*डॉ. हिमांशु मिश्र*

17. धर्म–निरपेक्षता, समावेशी राष्ट्र और पं0 नेहरु 227
—*डॉ. सर्वजीत सिंह*

18. भारत रत्न पं0 नेहरू : एक इंद्रधनुषी व्यक्तित्व 242
—*डॉ. विदुषी शर्मा*

19. नेहरू के शिक्षा दर्शन का एक अध्ययन 253
—*डॉ. मीनाक्षी शर्मा*

योगदान कर्ताओं की सूची 261

SAMPLE

1

पं0 नेहरू का लोकतंत्र एवं धर्म

14 नवम्बर 1889 को इलाहाबाद में जन्म से पूर्व जवाहर लाल नेहरू के पुरखे मुगल सम्राज्य के उस दौर में कश्मीर आए जब दिल्ली का सम्राट फर्रूखसियर था। नेहरू जी के जो पुरखे सर्वप्रथम दिल्ली आये उनका नाम राज कौल था। कश्मीर के संस्कृत एवं फारसी के बड़े विद्वानों में से एक थे। दिल्ली में इन्हें जागीर प्रदान की गयी थी। इन्हें जो मकान प्राप्त हुआ था वह नहर के किनारे था, इसी कारण इनका नाम नेहरू पड़ा। इनका परिवारिक नाम कौल से बदलकर कौल नेहरू हो गया तथा आगे चलकर कौल लुप्त हो गया और केवल नेहरू बचा रहा। कालान्तर में इनका परिवार आगरा आ गया। आगरा में ही नेहरू के पिताजी मोती लाल नेहरू का जन्म हुआ। तारीख थी 6 मई 1861। यहीं वह दिन, तारीख व महीना है जब गुरूदेव रविन्द्र नाथ ठाकुर का जन्म हुआ। मोती लाल जी के पिताजी की मृत्यु इनके जन्म के पूर्व ही हो गयी थी। मोती लाल जी का भरण–पोषण उनके दो भाइयों की जिम्मेदारी बनी। इनके एक भाई अर्थात जवाहर लाल के छोटे चाचा नन्दलाल नेहरू आगरा के हाइकोर्ट में वकालत करने के पूर्व खेतड़ी के दीवान थे। मोती लाल जी का बचपन उनकी छत्रछाया में बीता। कालान्तर में जब हाईकोर्ट इलाहाबाद स्थानान्तरित हुआ तब पूरे नेहरू परिवार का घर इलाहाबाद बन गया। इसके बाद की कहानी जवाहर लाल नेहरू के सृजन की कहानी है, जिससे प्रायः लोग परिचित हैं। यह सर्वविदित है कि एक

SAMPLE

प्रख्यात वकील का पुत्र होने कारण नेहरू जी का प्रारम्भिक जीवन कितना आलीशान था। पिता के पास धन की कमी नहीं थी, लेकिन गाँधी जी के सम्पर्क नें मोतीलाल जी के जीवन को पूर्णतः परिवर्तित किया और वे अपने शानदार एवं सफल वकालत को त्यागकर देश को स्वाधीन कराने के यज्ञ में अपना सब कुछ आहुति कर दिया। ऐसे माहौल में जवाहर लाल नेहरू के अन्दर भी देश को जानने एवं समझने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि जवाहर लाल के समस्त विचार लम्बे संघर्ष एवं अनुभव के परिणाम हैं। हमे इसी संदर्भ में जवाहर लाल नेहरू के लोकतन्त्र एवं धर्म संबंधी विचार को देखना चाहिये।

पं0 नेहरू भारतीय राजनीति के ऐसे पुरोधा के रूप में अमर हैं, जिसकी दूसरी कोई मिसाल नहीं। यह कहा जाता है कि अगर महात्मा गाँधी भारत के ऋषि हैं तो नेहरू जी भारत की आत्मा हैं तथा पीढ़ियों तक प्रकाश एवं मार्ग दर्शन प्रदान करते रहेंगे। नेहरू जी के व्यक्तिव पर मार्क्स, लेनिन, ग्लेडेस्टन, बट्रेन्ड रसेल, मार्ले जैसे विद्वानों का प्रबल प्रभाव पड़ा। इनको गांधी जी के सानिध्य में सक्रिय कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। गौतम बुद्ध के सिद्वान्तों का गहन अध्ययन नेहरू जी ने किया। क्या 'पंचशील' का प्रसिद्ध सिद्धान्त बुद्ध के सिद्धान्तों से अलग करके देखा जा सकता है?

लोकतंत्र का विचार – पं0 नेहरू लोकतंत्र के कट्टर समर्थक थे। इनके अनुसार लोकतंत्र केवल एक राजनीतिक अथवा आर्थिक अवधारणा मात्र नहीं है। यह एक मानसिक दशा है। लोकतन्त्र में राजनीतिक तथा आर्थिक क्षेत्र में अवसरों को सकारात्मक दिशा प्रदान करनें की क्षमता केवल उचित नेतृत्व में ही है। नेहरू जी की स्पष्ट मान्यता थी कि लोकतन्त्र का आधार राजनीतिक स्वतन्त्रता, आर्थिक समानता तथा अवसरों की समानता होती है। जनता का यह मूल अधिकार है कि नीतियों के निर्माण में उसकी पूर्ण एवं सक्रिय भागीदारी हो। मताधिकार पर आधारित लोकतंत्र की व्यवस्था में अनेक कमियों के बाद भी नेहरू जी यह स्पष्ट रूप से स्वीकार करते थे चूंकि कोई अन्य बेहतर विकल्प मौजूद नहीं है अतः यही व्यवस्था श्रेष्ठ है। लोकतन्त्र में

आत्मानुशासन अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसके अभाव में सत्ता तानाशाही पद्धति को अपना सकती हैं। इसका उदाहरण पाकिस्तान, बांग्लादेश, वर्मा जैसे देश हैं। जवाहर लाल नेहरू की दृष्टि में लोकतन्त्र की सफलता का आधार शिक्षा एवं साक्षरता है। देशी रियासतों का भारत में विलय तथा जमींदारी प्रथा की समाप्ति नेहरू की प्राथमिकताओं में से रहा। उन्होंने राजाओं एवं जमीदारों कों लोकतान्त्रिक प्रक्रिया एवं परम्परा के राह का एक बड़ा अवरोध माना। नेहरू जी की लोकतन्त्र की अवधारणा को संविधान सभा में दियें गये उनके एक भाषण के आलोक में समझा जा सकता है, जिसमें उन्होंने कहा था कि ''जब तक देश में एक भी व्यक्ति भूखा तथा नंगा हैं, हम स्वतंत्र नहीं हैं।" नेहरू जी के इस वाक्य से सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि उनके ऊपर गांधी जी का प्रबल प्रभाव था। शायद यही वह कारण था कि गांधी जी नें जवाहर लाल नेहरू को अपना उत्तराधिकारी कहा था। उनकी स्पष्ट मान्यता थी कि जब तक देश में आर्थिक असमानता विद्यमान है तब तक मताधिकार का कोई महत्व नहीं है। उन्होंने लोकतन्त्र को एक साधन माना साध्य नहीं। नेहरू जी की गहरी आस्था संसदीय प्रणाली, वाद–विवाद, विचार विमर्श इत्यादि पर थी। यह भी ध्यातव्य है कि नेहरू जी प्रेस की आजादी के प्रबल समर्थक थे। वे कहा करते थे कि लोकतंत्र में प्रेस पर किसी भी दशा में अंकुश लगाये जाने का समर्थन नहीं किया जा सकता।

'नेतृत्व' लोकतंत्र का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। इस बात को पं0 नेहरू स्पष्ट तरीके से स्वीकार करते थे। उनकी दृष्टि में लोकतन्त्र में नेतृत्व के अन्दर लोगों का नेतृत्व की क्षमता होनी चाहिये। भीड़ की इच्छा के अनुसार अपनी गतिविधि को संचालित करने वाला व्यक्ति नेतृत्व नहीं कर सकता। इस स्थिति में मानव प्रगति भी संभव नहीं है। इसी प्रकार सामान्य जनता से कटा–कटा रहनें वाला नेतृत्वकर्ता की सफलता भी संदिग्ध होती है तथा यह लोकतंत्र की दृष्टि से उचित नही होता है। नेतृत्व के लिये यह आवश्यक है कि उसकी सोच सामान्य जन की तरह नहीं होना चाहियें। यदि ऐसा होगा तो उसके चिन्तन का स्तर निम्न हो जायेगा तथा वह उसके आदर्शो के साथ–न्याय नहीं कर पायेगा। यह

आवश्यक है कि नेतृत्व में वह क्षमता हो, जिससे कि व जनता को सत्य का दर्शन करा सके। यह तभी सम्भव है जब उसका चिन्तन इस स्तर का हो कि उसे स्वयं 'सत्य' का बोध है। पं0 नेहरू का विचार था कि लोकतान्त्रिक व्यवस्था में नेतृत्वकर्ता परिस्थितियों के अनुरूप अपने कार्य व्यवहार का संचालन करता है तथा न्यूनतम प्रतिकूल मार्ग का अनुसरण करता है। यद्यपि परिस्थितिजन्य अनुकूलन एक सीमा तक तो स्वीकार्य होती है, किन्तु यह सदा–सर्वदा ध्यान में होना चाहिये कि अनुकूलन के फेर में मूल आदर्श तथा लक्ष्य प्रभावित न होने पाये। यह ऐसी दशा है, जो प्रत्येक समय अस्तित्ववान रहेगी तथा आगामी हर पीढ़ी को इस समस्या से जूझना होगा तथा हर व्यक्ति को अपने स्तर से इस समाधान को ढूँढ़ने का प्रयत्न करना होगा।

'लोकतन्त्र' वह पद्धति है, जिसमें बहस, असहमति तथा वार्तालाप महत्वपूर्ण होता है। इस पद्धति में बहुसंख्यक कभी भी अल्पसंख्यक के अधिकारों का हनन नहीं कर पाते। नेहरू जी की दृष्टि में लोकतन्त्र युद्ध और शान्ति दोनों ही परिस्थितियों में कार्य करने में सक्षम होता है। यह गतिशील परिवर्तन का सशक्त माध्यम है। उनके आर्थिक चिन्तन के अनुसार लोकतान्त्रिक शासन पद्धति के अन्तर्गत सार्वजनिक तथा निजी दोनों ही क्षेत्र समान रूप से देश की आर्थिक प्रगति में सहभागी बन सकते हैं। उन्होंने अमेरिका का उदाहरण देते हुये कहा कि पूंजीवाद के प्रमुख केन्द्र होने के बाद भी वहां निजी क्षेत्र तथा लोक उद्यमों दोनों का समान अस्तित्व है। द्रष्ट्रव्य है कि जिन देशों में समाजवादी लोकतांत्रिक व्यवस्था स्थापित है, वहां भी संसदीय लोकतन्त्र प्रभावी भूमिका में है।

पं० नेहरू की दृष्टि में वयस्क मताधिकार किसी भी देश के संसदीय लोकतन्त्र की सफलता का मुख्य आधार होता है। मताधिकार राजनीतिक परिवर्तन का सशक्त माध्यम होता है और यह तभी सम्भव है जब आर्थिक लोकतंत्र स्थापित किया जाय। पुनश्च शिक्षा का विस्तार भी लोकतंत्र की आधारशिला होती है। दुनिया के तमाम देश इसके उदाहरण है किन्तु भारत एक ऐसा देश है, जहां लोकतंत्र की स्थापना ऐसी परिस्थिति में हुयी, जिसमें शिक्षा की दशा उत्साह उत्पन्न करने वाली नहीं थी। उन्होंने दुनिया भर के देशों का उदाहरण देते हुये

लिखा। चूंकि वहां पहले आर्थिक क्रान्ति के फलस्वरूप जनसमुदाय की मांगों में वृद्धि हुयी और लोकतांत्रिक व्यवस्था नें जनता की मांगों को उनके अनुसार पूरा करने का प्रयास किया किन्तु भारत में इसके विपरीत परिस्थिति है। यहां पर पहले राजनीतिक लोकतन्त्र स्थापित नहीं था इसलिये सामान्य जनता की मांग पूरी नहीं की जा सकी। पं0 नेहरू के अनुसार जनता के मध्य उत्पन्न हुयी राजनीतिक तथा आर्थिक चेतना का सार्थक समाधान शिक्षा के द्वारा ही सम्भव है। उनकी स्पष्ट मान्यता थी कि यदि किसी देश की, राजनीतिक व्यवस्था यदि उस देश कि जनता की मांग एवं उसके पूर्ति के मध्य विद्यमान रिक्तता को भरने में सक्षम नहीं हो पाये तो निश्चित रूप से वह राजनीतिक व्यवस्था पिछड़ जायेगी और अन्ततः नष्ट हो जायेगी।

पं0 जवाहर लाल नेहरू नें केन्द्रीकरण की प्रवृत्ति को नकारते हुये इसे मानव स्वतन्त्रता के लिये खतरा बताया है। उनकी दृष्टि में बदली हुयी परिस्थितियां यह बताती हैं कि दुनिया के तमाम देश एक–दूसरे पर निर्भर हो गये हैं। इस परिस्थिति में उन्होंने विश्व सरकार की आवश्यकता को महसूस किया। लेकिन शर्त यह है कि उस विश्व सरकार में राष्ट्रीय स्वतन्त्रा की समस्या एक प्रमुख समस्या है और नेहरू जी के अनुसार इस समस्या का समाधान संसदीय लोकतंत्र की स्थापना द्वारा किया जा सकता है। एक सत्तात्मक अथवा शासन का तानाशाही रूप लम्बे समय तक जनमत को नजर अंदाज नही कर सकता तथा एक समय के बाद बुद्धिजीवी वर्ग ऐसी शासन व्यवस्था के विरूद्ध उठ खड़ा होता है। पं0 नेहरू की दृष्टि में यह आवश्यक है कि केन्द्रीकरण एवं विकेन्द्रीकरण के मध्य उचित सामंजस्य स्थापित किया जाय। नेहरू जी नें यह मत प्रकट किया है कि लोकतन्त्र की राह का एक प्रमुख अवरोध नौकरशाही भी हैं। उनके अनुसार नौकरशाही के विस्तार का अर्थ होगा सरकारी तंत्र में ऐसे प्रशिक्षित लोगों को प्रविष्ट करना जो कार्य–कुशल तो होंगे किन्तु सरकारी तंत्र में बाधा उत्पन्न कराने वाले होगे। अतः नौकरशाही पर नियंत्रण संसदीय लोकतन्त्र की सफलता के लिये आवश्यक है।

पं0 नेहरू समाजवाद से बहुत अधिक प्रभावित थे। इसका प्रयोग उन्होने भारत जैसे देश जहां पर एक तिहाई से अधिक जनसंख्या कृषि

कार्यो पर निर्भर थी, में भूमि सुधार कार्यक्रम को अपना कर किया और जमींदारी व्यवस्था के उन्मूलन का सघन कार्यक्रम संचालित किया। नेहरू जी यह स्पष्ट तौर पर स्वीकार करते थे कि भारत में कृषि के विकास के साथ–साथ औद्योगीकरण की प्रक्रिया को भी तेज किया जाय। इसका कार्यरूप उनके शासन काल में कार्यान्वित पंचवर्षीय योजनाओं में सामने आये।

विकास के इस अवधारणा का लक्ष्य भारत में समाजवादी समाज के स्थापना के विभिन्न सोपानों को प्राप्त करना था। पं0 नेहरू की दृष्टि में लोकतन्त्र तभी सफल हो सकता है, जब देश में निर्धनता का अस्तित्व भी न हो। इस क्रम में उन्होनें निर्धनता की समाप्ति के लिये विज्ञान एवं तकनीक के प्रयोग पर बल प्रदान किया। उनका कहना था कि विज्ञान एवं तकनीक का प्रयोग उत्पादन में वृद्धि को सम्भव बना सकता है तथा इस आधार पर निर्धनता को न्यून्तम किया जा सकता है। वैज्ञानिक पद्धति के प्रयोग से उत्पादन में वृद्धि को सम्भव बनाया जा सकता है तथा इस आधार पर निर्धनता को न्यून्तम किया जा सकता है। वैज्ञानिक पद्धति के प्रयोग से उत्पादन में वृद्धि के माध्यम से राष्ट्रीय आय में वृद्धि करना नेहरू जी का लक्ष्य रहा किन्तु वे सदैव इस बात को ध्यान में रखते थे कि इसका लाभ किसी व्यक्ति विशेष के हाथों में ही सिमट कर न रह जाय। क्योंकि लोकतान्त्रिक व्यवस्था तभी फलीभूत हो सकती हैं जब सभी हाथों को काम हो और इस संदर्भ में अवसर की समानता अपरिहार्य है। इसी तरह के व्यवहार के माध्यम से सम्पत्ति की असमानता को न्यूनतम किया जाना सम्भव हो सकता है। उनकी यह स्पष्ट अवधारणा थी कि आर्थिक असमानता के रहते समाजवादी लोकतन्त्र स्थापित नहीं हो सकता। नेहरू जी यह शिद्दत से स्वीकार करते थे कि सैद्धान्तिक समाजवाद के स्थान पर व्यवहारिक समाजवाद को अपनाया जाना चाहिये तभी देश में वास्तविक रूप से लोकतन्त्र स्थापित किया जा सकता है। ध्यातव्य है कि पं0 नेहरू समाजवाद को प्रत्येक व्यक्ति, समाज अथवा राष्ट्र के लक्ष्य के रूप में देखना चाहते थे। वे स्वयं को समाजवाद के किसी सिद्धान्त विशेष के साथ सम्बद्ध न करते हुये यह कहते थे कि समाजवाद का अर्थ ऐसे समाज की स्थापना है जिसमें